शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January
2025

गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास में कम्प्यूटर के प्रति अभिवृत्ति का योगदान

शिखा सिंह
(शोध छात्रा)
डॉं. श्रृद्धा सोनी
(सहायक प्राध्यापक)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

शिक्षा न केवल क्षमतावान बनाती है। बल्कि सामाजिक प्रगति तथा विकास में भी सहायता करती है। शिक्षा द्वारा ही मानव जाति का विकास एवं उत्थान संभव है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने “गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास में कम्प्यूटर के प्रति अभिवृत्ति का योगदान” का अध्ययन करते हुये अपने स्थानीय अनुभवों के साथ-साथ अन्य पूर्व में हुये शोधकार्यों का अवलोकन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि बालक किसी भी कक्षा तथा पाठ्यक्रम को हो वह कम्प्यूटर का प्रयोग करता है।

प्रस्तावना

शिक्षा के द्वारा ही मानव का विकास संभव है मानव के वैज्ञानिक, दार्शनिक, बौद्धिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक चेतना का विकास शिक्षा द्वारा ही संभव हो पाता है अर्थात् कम शब्दों में कहे तो शिक्षा मानव का सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य में निर्णय लेने की क्षमता तथा सामाजिक परिवर्तनों की समझ विकिसित हो पाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य व अनुभव अपने जीवन से प्राप्त करता है। वही ज्ञान व अनुभव पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित करता कहा जाता है कि शिक्षित मनुष्य अपने वातावरण व परिस्थितियों के साथ समायोजन तथा सामंजस्य करने में अग्रणी होता है।

शिक्षा परिवार, समाज, देश एवं सम्पूर्ण विश्व के नागरिकों को जिम्मेदार एवं संवेदनशील बनाने हेतु एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। शिक्षा ही मनुष्य में संस्कारों व नैतिकता का निर्माण करती है। शिक्षा उचित आचरण, तकनीकी दक्षता,

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January
2025

अध्यात्मिक ज्ञान आदि को प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है। इस विचार से शिक्षा समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मानव. शिक्षा द्वारा ही समाज के आधार भूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता हैं। मानव समाज से तभी जुड़ जाता है। जब वह उस समाज के इतिहास से अभिमुख होता है।

शिक्षा व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व का विकास करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक व्यस्क की भूमिका निभाने के लिये समाजहित करती है तथा उसे समाज का सदस्य की भूमिका के लिये तैयार करती है। शिक्षा समाज में चलने वाली सोउद्देश्य प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा मानव की जन्मजात शक्तियों का विकास करके उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन करके उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा ही मानव को उसकी मानवीय गुणों का संचार करती है। इस सम्पूर्ण विश्व में जितने भी जीव हैं उन सभी में सीखने (अधिगम) की सर्वाधिक क्षमता सिर्फ मनुष्य में ही होती है।

शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये व्यवस्थित योजना बनाकर प्रयास करना चाहिए क्योंकि बिना योजना बनाए कोई भी कार्य को सफलता को प्राप्त नहीं कर पाता है। शिक्षा का उद्देश्य इस प्रकार होना चाहिए कि वह बालक के साथ-साथ समाज के लिये भी कल्याणकारी हो। शिक्षा के क्षेत्र में पुरातनकाल से लेकर अब तक कुछ न कुछ परिवर्तन होते रहे हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति का हो गया है। प्राचीन काल में शिक्षा सदैव शिक्षक प्रमुख हुआ करती हैं। वर्तमान समय में शिक्षक केन्द्रित ना होकर विद्यार्थी केन्द्रित हो गयी है।

गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम

गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम वे पाठ्यक्रम होते हैं। सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि पर आधारित होते हैं। जिसमें कला, वाणिज्य, मूल विज्ञान, मानविकी, सामाजिक कार्य, ललित कला, संगीत नाटक, रचनात्मक विषय आदि सम्मिलित होते हैं। जिसमें कक्षा आधारित शिक्षा दी जाती है। इसमें मानविकी तथा कला विषयों से सम्बन्धित विषय होते हैं। इन पाठ्यक्रमों में कौशल सम्बन्धी शिक्षा प्रदान नहीं की जाती है इनमें अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक अर्हता प्रदान की जाती है। इनमें B.A., B.Sc, M.A. आदि पाठ्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January 2025

कम्प्यूटर शिक्षा

आज का वर्तमान युग तकनीकी व विकास का युग है। कम्प्यूटर शिक्षा हर मनुष्य की आवश्यकता बन गया है। आज के युग में इंटरनेट का बहुत अधिक महत्व है। मोबाईल फोन भी कम्प्यूटर का लघु रूप है। इस आधुनिक समाज में गाँवों से शहरों तक सभी जगहों पर इंटरनेट का प्रयोग किया जाता है। कम्प्यूटर की सहायता से शिक्षण कार्य को और अधिक प्रभावित ढंग से किया जा सकता है। कम्प्यूटर की सहायता अधिगम तथा मूल्यांकन दोनों ही कार्य में सहायता मिलती है।

बालक के विकास की अवस्थाएं

"विकास, जीव और उसके वातावरण की अन्तःक्रिया का प्रतिफल है।" शिक्षा प्रक्रिया में उपयुक्त शैक्षिक परिस्थितियों वातावरण का निर्माण करके ही शिक्षार्थी के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन किये जा सकते हैं। शिक्षक ही इस कार्य को भली-भाँति करने में अग्रणी होता हैं। एक सफल शिक्षक के लिये आवश्यक होता है कि उसे अपने विषय का सम्पूर्ण व स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए साथ ही साथ शिक्षार्थी के विषय में भी समुचित ज्ञान हो। शिक्षार्थी के विषय में जानने हेतु शिक्षक को उसके विकास के बारे में भी ज्ञान होना आवश्यक तथा अभिवृद्धि व विकास से होने वाले परिवर्तनों को जानने हेतु शिक्षक को उसके विकास के बारे में भी ज्ञान होना तथा अभिवृद्धि व विकास से होने वाले परिवर्तनों को जानना भी अत्यावश्यक होता है।

गेसेल के अनुसार- "बालक के विकास सामजिक और सांस्कृतिक वातावरण की अहम भूमिका होती है।

हरलाक के अनुसार- ''विकास की प्रक्रिया बालक के गर्भावस्था से लेकर जीवन-पर्यन्त तक चलती रहती है तथा प्रत्येक अवस्था का प्रभाव इसके जीवन पर पड़ता है।''

विकास के संदर्भ में अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों ने अलग-अलग मत दिये हैं। बालक के विकास को निम्न भागों में विभाजित किया गया है-

1. शैश्वावस्था (1-5 वर्ष) 2. बाल्यावस्था (5-12 वर्ष) 3. किशोरावस्था (12-18 वर्ष)

1. **शैश्वावस्था**

शैश्वावस्था बालक की प्रथम व सबसे महत्वपूर्ण अवस्था जानी जाती है। इस अवसथा को ही भावी जीवन की आधार-शिला कहा जाता है। सिगमण्ड फ्रायड जी का मानना है कि बालक अपने जीवन में जो भी बनना चाहता है, उसका निर्धारण 4-5 की आयु तक ही हो जाता है। इस अवस्था में शिशु अपरिपक्व होता है तथा अपनी

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January 2025

आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वह अन्य व्यक्तियों पर आश्रित रहता है। उसका व्यवहार मूल प्रवृत्तियों से जुड़ा होता है जिसकी संतुष्टि वह तुरन्त चाहता है।

''जीवन के पहले चार-पाँच वर्षों में बालक भावी जीवन की नींव रख लेता है।'' **फ्रायड**

आज के वर्तमान समय में देखा गया है कि शिशु विभिन्न प्रकार की खेल सामग्री की तुलना में इलैक्ट्रानिक उपकरणों की ओर ज्यादा आकर्षित हो रहे हैं। चाहे टेलीविजन पर कार्टून चैनल देखना हो या मोबाइल फोन में गेम खेलना हो गया फिर कम्प्यूटर पर विडियों गेम इन सभी उपकरणों की ओर अधिक प्रभावित हो रहे हैं। शैश्वावस्था में बालक कम्प्यूटर को नहीं जानता परन्तु उसकी अभिवृत्ति, कम्प्यूटर में चल रहे गेम की ओर होती है।

क्रो एवं क्रो - 30वीं शताब्दी को बालक की शताब्दी कहा जाता है।

मनोवैज्ञानिको ने अपने परिणामों के आधार पर इस बात को अच्छी तरह सिद्ध कर दिया है।

"**एडलर** ने कहा है कि शैश्वावस्था द्वारा ही जीवन का पूरा क्रम निश्चित होता है।"

हरलाक - यह जन्म से लेकर दो सप्ताह तक चलती है दो वर्ष बाद आरम्भिक बाल्यावस्था आती है। और छः वर्ष की आयु तक रहती है।

कम्प्यूटर के प्रति अभिवृत्ति का विकास

शैश्वास्था में बालक की उम्र कम होती है इस अवस्था में बालक को अधिक बोध नहीं होता परंतु बालक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कम्प्यूटर का प्रयोग करता है आज के वर्तमान युग में छोटे बच्चे भी खिलौने व अधिगम सामग्री में रूप में श्।दकतवपक डवइपसमश् का किसी न किसी रूप में उपयोग करता है श्।दकतवपक च्ीवदमश् कम्प्यूटर का ही लघु रूप होता है जिसके द्वारा बालक के ज्ञान में परिर्वतन एवं विकास किया जा सकता है।

2. **बाल्यावस्था**

शैश्वास्था के बाद बालक के विकास का द्वितीय चरण बाल्यावस्था है। जिसे बालक के विकास का ''अनोखा काल'' कहा जाता है। इस अवस्था को समझ पाना मुश्किल होता है क्योंकि इस अवस्था में ही विभिन्न प्रकार के शारीरिक, मानसिक सांवेगिक, सामाजिक तथा नैतिक परिवर्तन होते है।

सिंगमंड फ्रायड और उनके सर्मथक वैज्ञानिकों ने इस अवस्था (बाल्यावस्था) को विशेष महत्व दिया है उन्होंने बताया की पहले 3 वर्षों में बालक का विकास बहुत तीव्र गति से होता है। उसके पश्चात 6 वर्ष तर्क कुछ गति धीमी हो जाती है।

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January 2025

जेम्स एवं सेमसन - का विचार है कि शैक्षिक दृष्टिकोण से जीवन चक्र में बाल्यावस्था से अधिक महत्वपूर्ण और कोई अवस्था नही है जो शिक्षक इस अवस्था के बालको शिक्षा देते है उन शिक्षकों को बालको की आधारभूत आवश्यकताओं, उनकी समस्याओ और उन परिस्थितियों की जानकारी होना आवश्यक है और जो उनके व्यवहार को रूपान्तरित और परिवर्तित कर देती है। इस अवस्था में बालक परिपक्व तो नही होता परन्तु कुछ स्तर तक बाहरी दुनिया को समझने लगता है।

इस अवस्था में ही बालक में संवेगात्मक अनुक्रियाये जैसे – भय, क्रोध, ईषर्या, जिज्ञासा, स्नेह और प्रसन्नता आदि निर्मित होने लगती है बालको की अपेक्षा बालिकाओं में इस अवस्था में भय अधिक होता है।

शैक्षिक महत्व - विभिन्न अवस्थाओं के साथ ही बाल्यावस्था भी एक महत्वपूर्ण अवस्था है। इसमें बालक पर माता-पिता एवं शिक्षक को अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता होती है।

1. शरीर के उचित विकास के लिये माता-पिता के साथ-साथ शिक्षक को बालको के लिये व्यवस्था करनी चाहिए।
2. बालको के मौलिक विकास के लिये अध्यापकों को अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने चाहिए।
3. बालको को उनकी अभिरूचि के अनुसार ही उचित अभिप्रेरणा दी जानी चाहिए।
4. विद्यालय एवं घर का वातावरण बालको के संवेगात्मक विकास के अनुकूल होना चाहिए। जिससे की बालक में कोई अनैतिक संवेग न उत्पन्न हो सकें।
5. बालकों की मित्रमंडली (Company) पर भी माता-पिता व शिक्षा को अधिक ध्यान देना चाहिए।

कम्प्यूटर के प्रति अभिवृत्ति का विकास

बाल्यावस्था में बालक विद्यालय में प्रवेश लेता है इसके साथ ही बालक सामाजिक परिवेश मे भी प्रवेशित होता है बाल्यावस्था में बालक शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में कम्प्यूटर का प्रयोग करता है वर्तमान समय में लगभग सभी विद्यालयों में स्मार्ट क्लासेस तथा कोरोना काल से Virtual Class का प्रयोग किया जाने लगा है जिसके द्वारा शिक्षण कार्य को जारी रखा गया। शिक्षण संबंधी सभी कार्यो जैसे- विभिन्न प्रकार के फार्मो को भरने, आनलाइन शिक्षण कार्य तथा शिक्षक अभिभावक सत्र सम्पन्न करने में कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाता है।

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January
2025

3. **किशोरावस्था**

किशोरावस्था, 12 वर्ष की आयु से प्रारंभ होकर 19 वर्ष तक या कभी-कभी 21 वर्ष तक भी मानी जाती है। कुछ मनोवैज्ञानिको ने इस अवस्था को तूफान की अवस्था कहा है। इस अवस्था को तूफान की अवस्था कहा है। इस अवस्था में बालको सर्वाधिक शारीरिक बायोलाजीकल परिवर्तन होते है। जिसकी वजह से किशोर का जीवन तनाव, चिन्ता व संघर्ष से घिर जाता है। कुछ परिश्चमी वैज्ञानिको ने इसे Teen Age भी कहा है। जरसील्ड के अनुसार ''किशोरावस्था वह काल है जिसमें विकासशील'' बालक बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर बढ़ता है।''

स्टेनले हाल ने ''किशोरावस्था का संघर्ष एवं तूफान की अवस्था कहा है।''

वेरियल जेम्स एण्ड सैम्पसन - ''किशोरावस्था, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का वह काल है। जो बाल्यावस्था के अंत से प्रारम्भ होकर प्रौठावस्था के प्रारंभ में समाप्त हो जाता है।'' किशोर को करना पड़ता है।

1. आत्म-सम्मान, आत्म स्वीकृति तथा सुरक्षा की समस्या।
2. स्वतंत्रता की समस्या।
3. सुख व आनन्द की चाह सम्बन्धी समस्या।
4. आत्मनिर्भर बनने की समस्या।
5. बिछुड़ने का भय या स्नेह की लालसा संबंधी समस्या।
6. नैतिक मूल्यों में बंधे रहने की समस्या।
7. विद्रोह की भावना।
8. विशेष रूचिया।
9. विषमलिंगी का मुक्ता।

शैक्षिक स्वरूप

किशोरवस्था ही- वह अवस्था अथवा काल है जिसमें बालक अपने सम्पूर्ण जीवन का प्रारूप तैयार करता है। एवं स्वयं को आने वाले भविष्य लिये तैयार करता है।

1. किशोरावस्था में शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है। स्वस्थ्य शारीरिक विकास के लिये विद्यालय में भी शारीरिक व्यायाम पर शिक्षकों को ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January 2025

2. किशोरियों में मानसिक द्वन्द्व की स्थिति अधिक रहती है। अतः किशोरावस्था में बालक को नैतिक मूल्यों की शिक्षा देना परम आवश्यक है।
3. किशोरावस्था में बालक सदैव अपने भविष्य की ओर चिन्तित रहता है। क्योंकि स्कूली स्तर की परीक्षा पास विश्वविद्यालय/महाविद्यालयों में प्रवेश लेता है यही वह समय होता है जिस उसे सर्वाधिक मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। इसमें वह निर्णय नही ले पाता की उसे किस शाखा, किस संकाप अथवा किस विषय में प्रवेश लेता है। इस समय शिक्षक तथा माता-पिता का दायित्व होता है कि अपने बालक को उसकी क्षमता तथा अभिरूचि के अनुसार उसे मार्गदर्शन दें तथा विषयों के चुनाव में उसकी सहायता करें।
4. किशोरावस्था में बालक जब किसी विषयों में ज्ञान प्राप्त करना चाहता है तो शिक्षक का कर्तव्य में ज्ञान प्राप्त करना चाहता है तो शिक्षक का कर्तव्य होता है कि उसे उस विषय के साथ-साथ अन्य व्यावसायिक विषय का भी ज्ञान उसे उसके विषय तथा व्यावसायिक जीवन से जोड़कर दें। आज के वर्तमान युग में बालक चाहे किसी भी वर्ग या संकाय का हो उसे आधुनिक शिक्षा अर्थात कम्प्यूटर शिक्षा से भी अवगत कराना चाहिए गैर-व्यावसायिक स्तर पर भी बालकों में कम्प्यूटर शिक्षा का विकास करना चाहिए। बालक में अभिवृत्ति व संज्ञान की उपयुक्त समझ किशोरावस्था में ही होती है। गैर व्यावसायिक वर्ग के बालकों को कम्प्यूटर के प्रति उत्साहित करना चाहिए गैर-व्यावसायिक वर्ग के विद्यालयों को कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान करना तथा उनमें कम्प्यूटर शिक्षा का विकास करना चाहिए।

कम्प्यूटर के प्रति अभिवृत्ति का विकास

वर्तमान युग में सभी कार्य आनलाइन रूप में संचालित होने लगे हैं कोरोना महामारी के दौरान से कम्प्यूटर का प्रयोग विभिन्न दफ्तरों, बैंको तथा शैक्षणिक संस्थानों में व्यापक रूप से किया जाने लगा हैै। विभिन्न स्तरों की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी तथा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षायें तथा मूल्यांकन भी कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाने लगा है। बालक चाहे किसी भी पाठ्यक्रम का विद्यार्थी हो वह कम्प्यूटर का प्रयोग शिक्षण प्रक्रिया को सरल एवं सुविधाजनक बनाने के लिए व्यापक स्तर पर करने लगा है।

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January
2025

निष्कर्ष

ओम प्रकाश (2022), सिंह, सूनी प्रताप (2004), सिंह, एम.पी. (2005) आदि के अध्ययनों तथा शोधकत्री द्वारा किये गये विभिन्न विद्यालयों व महाविद्यालयों के अवलोकन तथा स्वयं के व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर यह पाया कि वर्तमान युग में कम्प्यूटर की उपयोगिता तथा आवश्यकता को देखते हुये विभिन्न पाठ्यक्रमों तथा कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा कम्प्यूटर का प्रयोग उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप किया जा रहा है। अतः गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अधिक से अधिक कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए जिससे वे छात्र भी अपने जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकें।

संदर्भ सूची

1. डॉ. संगीता (2015) ''शिक्षा के सिद्धान्त'' उनुभव पब्लिसिंग हाऊस, 6/8/95/38, सर्वोदय नगर, अल्लापुर इलाहबाद, (उ.प्र.) 211006 पृ.सं. 9, 21
2. भटनागर, डॉ. ए.बी. तथा भटनागर डॉ. मीनाक्षी (2007) ''भारत मे शैक्षिक प्रधाली का विकास'' आर.लाल. बुक डिपो, निकट गर्वमेंट इण्टर कॉलेज, मेरठ पृ.सं.- 175, 217, 230
3. सारस्वत डॉ. मालती तथा प्रो.एस.एल. (नवीनतम संस्करण) ''भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामाजिक समस्यायें'' आलोक प्रकाशन 23/6 लाऊदर रोड, इलाहाबाद-0532 पृ.सं. 86, 90
4. ओझा, विनय कुमार (2019) ''कम्प्यूटर एक परिचय मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद (उ.प्र.) पृ.सं. 89, 92
5. शर्मा सुनन्दा (2010) '' कम्प्यूटर फण्डामेण्टल'' आईकावा इण्टर नेशनल एजुकेशन, आईकावा इण्टर नेशनल पब्लिक स्कूल ज्योलिकोटि, नैनीताल (उत्तराखण्ड) पृ.सं. 3, 11